अष्टापद प्रांजलि

डॉ. लता बोथरा

॥ জৈন ভবন ॥

जैन विद्या शोध संस्थान

जैन भवन

पी-२५, कलाकार स्ट्रीट
कोलकाता - ७०० ००७

प्रकाशक :
पी-२५, कलाकार स्ट्रीट
कोलकाता - ७०० ००७
दूरभाष : ०३३ २२६८२६५५
E-mail : jainbhawan@rediffmail.com

आर्थिक सहयोग
PRIME & SHINE TRADING PVT.LTD
NIVESH INVEST SINGAPORE PTE LTD.
USTAR DIAMOND SHANGHAI LTD.

दिसम्बर : २०१७

ISBN No. : 978-93-83621-00-3

मुद्रक :

अष्टापद भक्ति के सुमन को नमन

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम्।
त्वद् भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान् माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तत्चारुचूत कलिकानिकरैक हेतु।।६।।

(भक्तामर स्तोत्र)

जिस तरह आम वृक्ष की मंजरी को देखकर कोकिल मधुर आवाज करने लगती है उसी तरह मैं स्वयं अल्पश्रुत हूँ एवं बुद्धिमान पुरुषों के लिए परिहास (मजाक) का पात्र हूँ, अर्थात् अल्पज्ञ हूँ तथापि आपकी भक्ति ही मुझे बलात् स्तुतिगान करने के लिए विवश कर रही है।

अष्टापद तीर्थ सबसे प्राचीन जैन तीर्थ है, इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान का निर्वाण इस तीर्थ में हुआ था। परमात्मा ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती ने परमात्मा की स्मृति में यहाँ भव्य जिनालय का निर्माण किया था, इस जिनालय में वर्तमान चौवीसी के चौवीस तीर्थंकरों की रत्नमयी प्रतिमाएं प्रतिष्ठित की थी, रत्नमयी प्रतिमाओं की सुरक्षा का प्रश्न

उस काल में भी उठा था और सगर चक्रवर्ती के पुत्रों ने उसकी रक्षा के लिए चारों ओर खाई बनाई थी, जिससे जिनालय एवं परमात्मा की प्रतिमाओं की रक्षा हो सके, इस तीर्थ में परमात्म भक्ति करते हुए अनेक साधकों ने आत्मकल्याण साधा है, ऐसे साहित्यिक उल्लेख प्राप्त होते हैं।

यह क्षेत्र अत्यंत पवित्र एवं प्रभावक होने के कारण यहां रहकर साधना करने वाला साधक निश्चित ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता था किन्तु एकमात्र समस्या यह थी कि यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही दुर्गम रहा है, अति ऊँचाई पर स्थित इस पर्वत पर पहुँचकर पर्वत के शिखर पर स्थिर जिनालय में विराजमान प्रतिमाओं के दर्शन असंभव लगते हैं परन्तु भक्त के हृदय में तो परमात्मा की भक्ति ही उसे शिखर पर पहुँचा देती है, भक्ति का प्रभाव ही अचिन्त्य है।

रावण एवं मंदोदरी ने यहाँ जिनभक्ति की थी, रावण ने भक्ति करते हुए तीर्थंकर नामकर्म का बंध भी यही किया था, यह इस क्षेत्र का साक्षात् प्रभाव है। परमात्मा महावीरस्वामी के प्रथम गणधर गौतमस्वामीजी ने अपनी लब्धि से सूर्य की किरणों का आलंबन लेकर तीर्थयात्रा की थी, तब वहाँ अनेक ऋषि मुनि यात्रार्थ साधना कर रहे थे किन्तु यात्रा करने में सफल नहीं हुए थे तब गणधर गौतमस्वामी ने उन सभी साधकों को अपनी लब्धियों के द्वारा यात्रा करवाई थी। तत्पश्चात् उन सभी ने संयम ग्रहणकर आत्मकल्याण

साधा था। इसी प्रकार की अनेक घटनाएँ इस तीर्थ के साथ जुड़ी हुई हैं।

अष्टापद तीर्थ हिमालय की पर्वतमाला में कैलास पर्वत के समीप कहीं है। ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है किन्तु जिनालय एवं जिन प्रतिमाएँ दृष्टिगोचर नहीं होती है, यही कारण है कि कई सदियों से इस तीर्थ को लुप्त माना जा रहा है, हमें मात्र साहित्यिक उल्लेख प्राप्त हो रहे हैं और यही हमारी खोज का आधार है।

विगत दो दशकों से कुछ श्रावकों के मन में अष्टापद क्षेत्र की खोज करने का पवित्र विचार जगा, उन्होंने इस विचार को मात्र विचार की स्थिति में न रखकर खोज की दिशा में कार्य प्रारम्भ किया, इसमें डॉ. लता बहन बोथरा विदूषी श्राविका ने अष्टापद की खोज को अपने जीवन का लक्ष्य ही बना लिया, अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया, मन में परमात्मा के प्रति अनन्य भक्ति थी और प्रतिदिन केवल यही चिन्तन चलता रहा। ईस्वी सन् २००६ में स्वयं कैलास अष्टापद की ओर चल पड़ी। मन में आशा थी, उमंग थी, उल्लास था, भक्ति एवं भावना की प्रबलता थी, यात्रा में भरसक प्रयास किया गया कि अष्टापद से जुड़े हुए प्रत्येक क्षेत्रों का दर्शन करे, यात्रा के अंतिम क्षण तक यह आशा बनी रही कि हमें सफलता मिलेगी, किन्तु दुर्भाग्यवश हमें सफलता नहीं मिली, हम सब व्यथित हुए थे और हमारा अन्तर रो रहा था। यात्रा समाप्ति की

ओर आगे बढ़ रही थी, अब तो मन में यही भाव आ रहा था कि कोई दैवी चमत्कार हो और हमें अष्टापद का पता चल जाए किन्तु हमारे अन्तरात्मा की ध्वनि शायद शासन देवों तक नहीं पहुँची। तब मैंने कहा था कि अष्टापद की खोज होगी और यह लता बहन के द्वारा ही होगी, मैंने लता बहन के मन में अष्टापद के प्रति अपार भक्ति का दर्शन किया था। अवर्णनीय भक्ति, अपार श्रद्धा एवं दृढ़ निश्चय ही लता बहन का पाथेय था, हम सभी अपने-अपने कार्य में व्यस्त हो गये। कुछ ने तो यह मानकर इस खोज की यात्रा को ही समाप्त कर दिया कि हमें इस तीर्थ का पता ही नहीं लग सकता है, अतः समय व्यर्थ करना ठीक नहीं है। कुछ-कुछ नये लोग जुड़ते गये किन्तु धीरे-धीरे वे भी बिछुड़ते गए, एक मात्र लता बहन ही थी कि जिन्होंने यह खोज समाप्त नहीं की, निष्ठा एवं लगन से कार्य करती रही, देश-विदेश के परिभ्रमण में एक मात्र उद्देश्य लेकर कार्य करती रही।

यह कार्य केवल पुस्तकालय में बैठकर नहीं हो सकता है, केवल चर्चा करने से भी नहीं, यह कार्य कष्ट साध्य, श्रम साध्य एवं अनेक प्रकार की यात्राओं के द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है। इस कार्य में प्रभूत धनराशि की आवश्यकता भी रहती है, इन सभी की चिन्ता किए बिना ही लता बहन कार्य करती रही, भक्ति अपार थी अतः सफलता तो मिलनी ही थी, उन्होंने अपना कार्य छोड़ा नहीं।

भक्तिवशात् प्रस्तुत कार्य का ग्रंथन हुआ है, काव्य में भाव है, प्रत्येक शब्द अन्दर के अन्तःस्थल से प्रादुर्भूत हुआ है, प्रत्येक शब्द पुष्प की तरह सुन्दर है, मनोहर है, मधुर है। भले ही उसमें काव्यात्मक गुणों की श्रेष्ठता नहीं हो किन्तु भावात्मक ऊंचाई को हम सहज ही अनुभव कर सकते हैं। इस काव्य में परमात्मा की प्रार्थना है। अष्टापद के साथ जुड़े हुए प्रसंगों की चर्चा है और क्षेत्रदर्शन की तीव्र अभीप्सा भी है। अतः अपने आप में यह भक्ति का दस्तावेज है। अष्टापद प्रांजलि का मैं स्वागत करता हूँ। अष्टापद की खोज का यह दस्तावेज है और भक्ति का संगीत भी है। भविष्य में यह काव्य अनेकों के मन में भक्ति जागृत करने में निमित्त बनेगा। इस प्रांजलि को शत्-शत् वंदन।

डॉ. जीतेन्द्र बी. शाह
निर्देशक- एल.डी. इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी,
अहमदाबाद

बचपन की स्मृति के वो पल
संजोकर रखी हूँ जिनको मैं हर क्षण
भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है ये पद
जो बन गये आज मेरे जीवन का लक्ष्य

जहाँ आनन्द की अनुभूति है तो पीड़ा भी
समर्पण की चाह है तो कसक भी
प्रभु दर्शन की वो ललक
बन गयी आज मेरे जीवन का लक्ष्य
समर्पित कर रही हूँ आपके चरणों में ये स्वर

अष्टापद प्रांजलि

हे विश्व विधाता, आदिनाथ
विराज रहे हैं अष्टापद पर श्री ऋषभनाथ।

स्वर्णशैल की उत्तुंग चोटी धन्य हो गयी आज
बन गयी पावन तीर्थ मुक्ति पुरी कैलाश
साधु सन्त जिनके दर्शन को आते
अष्टापद की यात्रा कर मुक्ति पाते
देवगण भी जिनके गुण गाते
उनके सन्देश सभी को मार्ग दिखाते
हे भाग्य विधाता, योगीनाथ
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

सब संस्कारों के जन्म दाता
बन गये विश्व के प्रकाश प्रदाता
सूर्य, चन्द्र भी जिनके आगे शीश झुकाते
इन्द्र-इन्द्राणी जिनको मस्तक नवाते
हे मोक्ष दाता, वृषभनाथ
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

ब्राह्मी सुन्दरी को दे लिपि-अक्षर ज्ञान
नारी जाति को दिया जिसने सम्मान
जिनके दर्शन से हुआ
माता मरुदेवी को केवल ज्ञान
हे आदि विधाता, पुरुषोत्तम नाथ
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

असि, मसि, कृषि का भेद बताया
अहिंसा अनेकान्त का रास्ता दिखाया
अपरिग्रह का सन्देश सुनाया
लोक कल्याण का मार्ग सुझाया
हे अग्रदाता, कैलाश नाथ
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

राजा बन जन-जन का किया कल्याण
दिया मुक्त हस्त से सबको दान
छोड़ धन ऐश्वर्य, राज्य सम्मान
भिक्षु बन पाया केवलज्ञान
लिया अष्टापद पर निर्वाण
हे मुक्ति दाता, शिव नाथ
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

क्रोध, लोभ, माया-मोह को जीतकर
बने जिन, बुद्ध, शिव महान
ब्रह्मा बन दिया सृष्टि का ज्ञान
विष्णु बन जगत के बने पालनहार
हे ज्ञान दाता, कल्याण नाथ
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

वेदो और पुराणों में, आता है जिनका नाम।
सीखा है हमने, उनसे ज्ञान,
जन-जन करते है जिनको प्रणाम,
सभी गाते है उनका गुणगान,
कहते हैं हम जिन्हें आदि भगवान,
हे पालनहार जगत के कर्णधार,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

भोग-भूमि से कर्मभूमि में लाकर,
मानव को करवाई उसकी पहचान।
अहिंसा धर्म का कर आह्वान्,
हे आदिश्वर बाबा बन गये युग पुरुष महान।
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

खोज रही अष्टापद को, ये आँखें विरानी,
बिन दर्शन व्यर्थ है, ये जिन्दगानी,
आ रही हूँ मैं, हे आदिश्वर दादा,
मेरी नैया तुमको है तिरानी।
हे कल्याणकारी जगत् नाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

जहाँ के कण-कण से गुंजरित होती उनकी वाणी,
अष्टापद का हर पत्थर सुना रहा उनकी कहानी।
शीतल पवन की बयार से,
खिल-खिलकर कह रहा जुबानी।
हे योगीराज, विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

मेरा जनम् है तुम्हारा वरदान,
मांग रही हूँ तुमसे आत्म ज्ञान।
अष्टकर्म का यह जंजाल महान,
उबारो मुझे इससे दे मुक्ति का ज्ञान।
हे सच्चिदानंद अर्हत् नाथ।
विराज रहे हैं अष्टापद पर।
श्री आदिनाथ

नमन करती हूँ मैं आपको शत् शत् बार,
पार लगाना मुझे यही है विनती बारं-बार
पथ पर चल तुम्हारे तुमको पा जाऊं मैं
हे मुक्तिनाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ।

सिन्धु, सतलज, व्रह्मपुत्र, सरस्वती की धारा,
लेकर आ रही अष्टापद से ये संदेश तुम्हारा,
दया, मैंत्री, क्षमा और अहिंसा का,
पाठ पढ़ाकर किया कल्याण हमारा,
हे करुणासागर दयानाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

देकर आत्मज्ञान का पाठ,
बन गए आप जगत् नाथ,
पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण,
चहुँ ओर फैला आपके ज्ञान का प्रकाश,
हे प्रकाशनाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

हे नाभिराय मरुदेवी के नन्दन,
केसर, चन्दन व पुष्प चढ़ाती तुम्हारे चरणन।
मैं मेरा सबकुछ कर रही आपको अर्पण,
हे जगत् नन्दन तारणनाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर।
श्री आदिनाथ

धरती गगन और सितारे,
धूमिल सबकी चमक तुम्हारे आगे,
वन, उपवन, खग, विहग, चहके सारे,
जहाँ जहाँ चरण पड़े तुम्हारे,
हे पालनहार आदीश्वरनाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

चहुँ दिशाओं में शोर मचा,
बाबा के नाम का ढोल बजा,
तज दिया इस झूठी दुनियां का मजा,
बस पाना है तुमको अब यही रजा,
हे कर्णधार, दुनिया जहाँ के नाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

छोड़ दिया संसार बन वैरागी,
माँ की ममता भी त्यागी,
सुन तुम्हारी कथा मैं भी अब जागी,
रचाऊँगी मन मंदिर में तुम्हारी सुन्दर आंगी,
आत्मसात् कर रही मैं तुम्हारी दीप्त वाणी,
हे मरु नंदन वैरागी नाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

जीवन मरण की डगर पर खड़ी हूँ,
बस एक ही चाह लिये खड़ी हूँ,
कब आएंगी आपके दर्शन की घड़ी,
कहीं टूट न जाएं जीवन की यह कड़ी,
हे सर्वेश्वर जीवननाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

बड़ी दूर से आयी करने तुम्हारे वन्दन,
बेताब मन में हो रहा स्पन्दन,
तेरे द्वार पर खड़ी हे मरुनंदन,
अब तो दे दो मुझे दर्शन
हे करुणा नंदन ज्ञान नाथ
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

अष्टापद पर अब है जाने की बारी
प्रभु दर्शन को प्यासी ये आंखें है मतवाली,
अपने कर्म खपाने की अब हो चुकी तैयारी,
मुक्ति के पथ का ये सफर है जारी,
हे देवाधिपति अनाथों के नाथ,
विराज रहे हैं अष्टापद पर,
श्री आदिनाथ

ना राग-द्वेष है ना कोई चाह
उमंग और तरंगों की है यह राह
किस ओर बसा है वो जहाँ
बस जाना है हमें आज वहाँ
मंजिल का पता है न ठिकाना
बस जाना है हमें वहाँ
नाव है पतवार है पर माझी कहाँ
ढूँढू मैं उसे यहाँ-वहाँ
मंजिल का न पता है न ठिकाना
हे जगत् के प्राणधार
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

घूम रही मैं यहाँ वहाँ वन-उपवन-गिरि-कन्दरा
सूरज की पहली किरणों का प्रकाश पड़ा वहाँ
जिन चरणों को नमन कर रहा जहाँ
मिल गयी उमंग-तरंगों की वह राह
मंजिल भी है पता भी और ठिकाना
बस जाना है हमें वहाँ
जहाँ मेरे आराध्य देव विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

युगों-युगों से ये दीवानी
सुनती आ रही तुम्हारी कहानी
सब जीवों में परस्पर प्रेम की तुम्हारी वाणी
अष्टापद के हिम शिखर पर बैठे हे केवलज्ञानी
हे केशरिया नाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

जब आपकी वाणी खिरती है
खो जाते हम अपने में
देख स्वयं की आत्मा में
समझ आता तब सब जीवों का भाव
समानता सहयोग ही सबका आधार
मैं नहीं तुम नहीं, झूठा लगता यह देह भान
तब पता चलता संसार का यह विधान
खाली हाथ आये हैं, खाली हाथ जायेंगे
सिर्फ ले जायेंगे प्रभु वाणी का ज्ञान
हे महामानव विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

बूँद-बूँद से भरी गागर, नदियों से भरा सागर
मन में उठने लगी तरंगे, होंठो पर गीत लगे सजने
नयनों से अश्रु लगे छलकने
झरनों की कल-कल मधुर ध्वनि के साथ
मैं बढ़ने लगी उस पथ पर,
जहाँ कभी प्रभु गये थे,
जीवन जीने की राह दिखाकर,
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

प्रभु दर्शन की प्यास, कब पूरी होगी आस
निश दिन कर रही प्रयास
पहुँच जाने को तुम्हारे पास
हे मेरे नाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

जीवों में परस्पर प्रेम,
सहयोग ही बना जीवन का आधार
सह अस्तित्व का कैसा है ये विचार
कर्म और पुरुषार्थ करो,
यही है प्रभु वाणी का सार,
उसी पथ पर तुम्हारे चलकर मुझे मिलेगा
जीवन जीने का ज्ञान
बस अब करना है इसी का संज्ञान।
हे ज्ञान दाता विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

पंच महाव्रत का तुमने जो किया बखान
वीर प्रभु ने उसे दी फिर से पहचान
जहाँ पर पाया तुमने निर्वाण
विराज रहे है उसी अष्टापद पर मेरे प्रभु महान
श्री आदिनाथ

लोग कहते है वह कैलास अब कहाँ
ऋषभ प्रभु का निर्वाण कभी हुआ जहाँ
मिल गया मुझे वह कैलास वहाँ
स्वप्न नहीं भ्रम नहीं, दीख रहा कैलास यहाँ
कभी भरत की अयोध्या बसी थी जहाँ
हे कैलाशनाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

कब क्यूं कैसे ये प्रश्न है जारी
जिनमें उलझकर मेरे कर्मों का
घड़ा हो रहा है भारी
होना है मुझे इनसे दूर, लेके शरण तुम्हारी
अब तो सुन लीजिये प्रभु ये अरज हमारी
हे जगत्पति विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

मैं प्रभु दर्शन की मतवाली
खोज रही हिमगिरि के
उतंग शिखर पर प्रभु मूरत न्यारी
कमल सिंहासन पर बैठे प्रभु मनोहारी
समझ नहीं आता कैसे करूं
जाने की तैयारी
समय की मार पड़ी है मुझपर भारी
अब तो भर दो मेरे आँचल में
खुशियाँ सारी
तभी आयेगी दर्शन की मेरी बारी
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

आस लगाये बैठी हूँ कब आयेगी जाने की बारी
वीर प्रभु की सुन वाणी,
चले अष्टापद गौतम ज्ञानी
लिये आत्ममुक्ति का भाव
किये दर्शन वहाँ आन
जब वीर प्रभु का साथ छूटा
तब मोंह का भाव टूटा
और पाया केवल ज्ञान
ढूंढ़ रही उसी अष्टापद को
जो बन गया मुक्ति का स्थान
जहाँ की पावन धरा पर हुआ
मेरे ऋषभ प्रभु का निर्वाण
हे मुक्ति पथ के गामी
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

मैं बिन माझी बिन पतवार की नाव हूँ,
कब मिलेगा खेवैया इस इन्तजार में हूँ,
बुन रही ख्वाब उस क्षण का,
जब उतरूँगी उस पार
जहाँ है तुम्हारा आवास
होंठो से फूटे गीत,
नयन करे इंतजार
उस लक्ष्य तक कैसे पहुँचू,
जो मेरे जीवन का आधार
विकल होकर कर रही इंतजार
मंजिल पर पहुँचने को दिल है बेकरार
हे जग खेवैया
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

दर्शन-ज्ञान-चारित्र का यह मोक्षमार्ग तुमने बताया
सृष्टि का ये कैसा विधान तुमने रचाया
'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'
का पाठ जन-जन के मन में बसाया
हम नादान अबोध भूल गये
वो पाठ जो मन में था रमाया
जब ढल गयी उमरियां,
तब अहसास मुझे आया
राग-विराग-प्रतिकार सब छोड़
रग-रग में अब प्रभु नाम समाया,
क्षमा करो प्रभु
आज पुनः याद आया
वो ज्ञान जो कभी आपने सुनाया
हे ज्ञानेश्वर विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

विहग् चहक रहे वन उपवन में,
भंवरे मँडरा रहे कलियन में
दिन बीते मास बीते, बीत गया यह साल भी
कब आयेगा बसन्त मेरे भी जीवन में
जब पहुँचेगें प्रभु के पास अष्टापद में
हे कर्णधार विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

युगों-युगों से खड़ा है अचल,
पर्वत कैलास महान
कभी न मिटेगी इसकी आन बान शान
मुझे भी दर्शन मिलेगा कभी यही है मेरी अरदास
मन-वचन-कर्म से करती हूँ तुम्हारा ध्यान
हे ऋषभनाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

बन-बन भटकूं, पर्वतों, कंदराओं में खोजूं
पर पाया तुमको अपने अन्तर में
उमंग उल्लास से भर आया ये मन
समा गयी छवि मेरे अंग-अंग में
प्रकृति की है ये अद्‌भुत लीला
रच दिया जीवन का उपवन
सृष्टि के इन सुन्दरतम पुद्‌गलों से,
समर्पित कर रही हूँ
मेरा जीवन उन चरणों में
आशा यही आकांक्षा यही,
यही है अब जीवन की आस
तेरे चरणों की रज लगा लूँ अपने ललाट
हे जीवनधार विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

चारों ओर घिरे हिम शिखरों के मध्य,
खड़ी मैं देख रही चकित निःशब्द, निस्तब्ध
सामने खड़ा है मेरे ख्वाबों का फसाना हकीकत बन
तरंगित मन आँखे सजल
और होंठ मूक बन निहार रहे है।
यह अद्‌भुत अनुपम मनोहर दृश्य
ना द्वेष है ना राग है
बस प्रेम और आस्था से खिची जा रही
शांत सुन्दर निश्छल कल-कल
बहती झरनों के मधुर ध्वनि के साथ
आगे बढ़ती आ पहुँची प्रभु के द्वार
कल तक जो ख्वाब था
आज बन गया वह साक्षात्
चौंधया रहे है मेरे ये नयन
देखकर जगत् का यह
अविश्वसनीय, अकल्पनीय, और सुन्दरतम निर्माण,

जैसे जागृत रहकर भी स्वप्न लोक में कर रही विचरण
उस अद्भुत तेजस्वमयी प्रकाश के मध्य में
स्वयं को समर्पण कर रही प्रभु चरणन
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

ऋषभ-ऋषभ पुकार रही है, माता मरुदेवी हो बेचैन
पुत्र को बिना देखें अब न पड़ता चैन
राजपाट सब छोड़, मोहबंधन तोड़
कहाँ चला गया मुझको अकेला छोड़
कहा पौत्र भरत को, अब तो मिला दो, मेरे पुत्र से
उसका मुख दिखला दो।
शरीर थक गया आँखों की रोशनी भी पड़ी फीकी,
पर न छूटा पुत्र मोह
हाथी बना वाहन चल पड़ी पुत्र दर्शन को
समवसरण पहुँच देखा जो पुत्र को

तब अहसास हुआ पुत्र के वैभव का
अंधियारे से उजियारे में आ गई
ज्ञान का दीप जल उठा मन मंदिर में,
सारे दुःख भूल सुख के सागर में डूब गई,
पल में मोंह छूटा, केवलज्ञान हुआ
मोक्ष का ताला खुला, पाया निर्वाण
ऐसी थी माता मरुदेवी महान।
जिनके पुत्र प्रभु ऋषभ
विराज रहे हैं अष्टापद पर
हे आदिनाथ

ऋषभ प्रभु की महिमा अति भारी
जो दर्शन करें वो बने मोंक्ष अधिकारी
फरमाया श्री वीर प्रभु ने,
जिसको कुछ पाना है उसको अष्टापद जाना है,
जहाँ विराज रहे है ऋषभ प्रभु

राह कठिन है पर असंभव नहीं,
मंजिल सामने है पर पता नहीं
प्रभु देने को आतुर है, पर लेने वाला कोई नहीं,
स्वार्थ और मोह के बंधन तोड़
चल पड़ो उस राह पर
जहाँ जीवन भी है और मुक्ति भी,
कर्म और पुरुषार्थ बनेगा उसका सहारा
जिसको अष्टापद है जाना, ऐसी भावना बनाना,
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

खड़ी-खड़ी निहार रही मन है बेचैन
किस राह जाऊं न मिल रहा चैन,
इंतजार करते-करते बीत गई रैन
आगे मार्ग विकट है और वन भी गहन
प्रभु अब तुम्हीं मार्ग दिखाओं, मन है बेचैन।
हे मोक्षगामी विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

भूत और भविष्य के बीच,
वर्तमान में मैं खड़ी हूँ,
एक ओर खाई है तो दूसरी ओर अन्धकार
दोनों के बीच खोज रही उजियारे का मार्ग
मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, जिसने यह जान लिया
उसने पा लिया जीवन का सार
सुख बाँटते रहो, खुशियां लुटाते रहो,
समझ लो जीवन का यह राज,
हे जगदीश्वर विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

जग के भंवर में फँसी मेरी नैया
आतुर हो पुकार रही हे खेवैया
पल-पल बीत रहा युगों के समान
पता नहीं कब निकला तीर से कमान
अब पछताएं क्या होगा, जब फंसी मेरी नैया
आतुर हो पुकार रही हे खेवैया
हे निरंजननाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

ऊँचे-ऊँचे शिखरों पर हो रहा है हिमपात भारी
डगर कठिन है पर
मेरी यात्रा है जारी
प्रभु दर्शन की अब आयी है मेरी बारी
एक-एक योजन की आठ पैढ़ी
पार कर देखी प्रभु मूरत न्यारी
प्रभु चरणन की पूजा कर
मैं तो हो गयी बलिहारी
स्वीकार करो मेरा वंदन हे मनुहारी
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

दुःख सुख जीवन की छाया
ये सब है जग की माया
इन सबसे दूर भरत ने सिंह निषधा भवन बनाया
जिसमें रत्नों की प्रतिमा को बसाया

रानी दमयन्ती ने जिनकी पूजा कर तिलक लगाया
रावण ने भी भक्ति भाव से जहाँ शीष नवाया
गौतम स्वामी ने भी जहाँ
कण्डरिक-पुण्डरिक चरित्र रचाया
ऐसे अष्टापद पर विराज रहे हैं
श्री आदिनाथ

साज बज रहे है सुर सज रहे है
पायल की झंकार पर गीत गाते हुए चल रहे है,
देवी-देवता भी आ रहे है
इन्द्र-इन्द्राणी सब शीश नवा रहे हैं
प्रभु का केवलज्ञान उत्सव सब मना रहे है
समवसरण की रचना कर, प्रभु की देशना सुनकर
जन-जन फूल बरसा रहे है
जाना है उस अष्टापद पर जहाँ प्रभु विराज रहे हैं
श्री आदिनाथ

जब भी कोई वहाँ जाता है
कभी खाली हाथ नहीं आता है
मूरत तुम्हारी देख भक्ति भाव में डूब जाता है
अपने अन्तराय कर्म की वेदना को भी भूल जाता है
सुख-दुःख से दूर तुम्हारी अनुभूति में समा जाता है
हे वीतराग विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

बहुत करी तन की सेवा, अब मन में झांक जरा
अपना दिल क्या कहता है यह जान जरा
प्रभु चरणों में जाकर अब तो नैया तार जरा
ऋषभप्रभु की शरण में आन
बेड़ा कर पार जरा
हे जग खेवैया विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

पल में जीवन पल में मृत्यु यही तो खेल निराला
कोई समझ नहीं पाता यह विधान तुम्हारा
जो पथ तुमने दिखाया उसी पर चल मिलेगा किनारा
अब तो बस केवल यही एक सहारा
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

दिल धड़क रहा है प्रभु दीदार को
मेरा मन तड़प रहा है
नव कलियन और पल्लवों से
उपवन सज रहा है
बगियन का माली भी हंस रहा है
पर प्रभु दर्शन को मेरा मन तड़प रहा है।
हे सृष्टि रचयिता विराज रहे हैं अष्टापद पर
हे आदिनाथ

बेचैन हो पूछ रही दिल की धड़कन
कब मिलेंगे मुझे मेरे भगवन
अब न कभी छोडूंगी ये चरणन
स्वीकार करो प्रभु मेरा समर्पण
हे त्रिलोकेश्वर विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

जो जन्म लेता है वो मृत्यु अवश्य पाता है
हे प्रभु आपसे मेरा
जन्मो-जन्मो का नाता है
जो भी तुमको अष्टापद में ध्याता है
वो मुक्ति अवश्य पा जाता है
हे प्रभु आपसे मेरा जन्मों-जन्मों का नाता है
हे देवाधिपति विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

हे मानव! जीवन को क्यों व्यर्थ गवांता है
स्वार्थ, मोह और हिंसा में क्यों पड़ जाता है
देखकर प्रभु महिमा तुम्हारी
फिर भी नहीं कुछ सीख पाता है
हे मूर्ख मानव!
जीवन को क्यों व्यर्थ गवांता है
जो अपने जीवन को
प्रभु पथ पर चलाता है
वहीं उसे सार्थक बनाता है
हे मूर्ख मानव!
जीवन को क्यों व्यर्थ गवांता है।
कह गये ऋषभ प्रभु
सिर्फ मानव ही स्वयं को
मुक्ति का अधिकारी बनाता है
हे महामानव विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

आज या कल अवश्य जाना है,
हाड़ मांस के इस शरीर को मिट जाना है
यही तो दुनिया का फंसाना है
मैं शरीर नहीं आत्मा हूं ये जान प्रभु के चरणों में
आत्मभाव से रम जाना है
हे आत्मज्ञानी अष्टापद पर विराज रहे हैं
श्री आदिनाथ

हे चक्रेश्वरी माता
अब तो पूरी करो मेरी आस
ले चलो मुझे ऋषभ प्रभु के पास
कर रही हूँ मैं आप से अरदास
हे माता अब तो सुन लो मेरी पुकार
ताकि पहुँच सकूं मैं प्रभु के पास
हे चक्रेश्वरी माता अब तो करो मेरा बेड़ा पार
ले चलो मुझे मेरे प्रभु के पास

करबद्ध हो विनती कर रही
सुन लीजिये मेरा बात
सब कष्टों का बस एक ही इलाज
हे दीनानाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

रैना बीती भोर भई पक्षी लगे चहचहाने
कलियाँ लगी खिलने
फूल लगे मुस्कराने
शबनम की बूँदे पत्तों पर सजने लगी
देख प्रकृति का ये सौन्दर्य
मैं भी गुनगुनाने लगी
जहाँ मूक पत्थर भी लगे बोलने
धरा से प्रस्फुटित होने लगा संगीत
ऐसे अष्टापद पर विराज रहे हैं
श्री आदिनाथ

कितने झंझावात आये और चले गये
पर न छूट सकी मेरी ये लगन
अब तो ले लो प्रभु मुझे अपनी शरण
पल-पल हो गया भारी पथरा चुके नयन
अब तो ले लो प्रभु मुझे अपनी शरण
हे शरणदाता विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

अम्बर से मोती बरस रहे, बादल से आ रही फुहार
शबनम की बूंदों से हो रहा श्रृंगार
झरनों की ध्वनि से बज रहा साज
मानो सब मिलकर
अभिषेक कर रहे है प्रभु का आज
देवी-देवता कर रहे फूलों की बरसात
आ गयी मेरे होठों पर भी मुस्कान
विराज रहे है अष्टापद पर मेरे प्रभु महान

भर लायी कटोरा केसर का
मैं नवअंग पूजूं ऋषभ जिनेश्वर का
आंगी रचाऊं प्रभु परमेश्वर का
पुष्प का श्रृंगार करूं सर्वेश्वर का
आरती उतारूं प्रभु मुक्तेश्वर का
हे भुवनेश्वर विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

प्रकृति का ये कैसा श्रृंगार
छहो ऋतुओं का हो रहा आगाज
आश्चर्य में हूं देख विधि का यह विधान
सब मिलकर कर रहे ऋषभ प्रभु का बखान
पल-पल में प्रकृति रूप बदलकर
कर रही प्रभु को प्रणाम
हे विश्व विधाता विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

ऋषभ प्रभु के मुख से निकले जो शब्द
बन गये वो जीवन जीने के मंत्र
पोथी पन्ने भी हो गये उसके आगे निःशब्द
मिल गया आज मुझे मेरे जीवन का लक्ष्य
ऋषभ प्रभु के मुख से निकले जो शब्द
हे कृपालुनाथ विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

जो ऋषभ प्रभु को ध्यावे
उसका भव बंधन कट जावे
जो ऋषभ प्रभु को ध्यावे
उसके कर्म बंधन कट जावे
जो अष्टापद का दर्शन पावे
उसका बेड़ा पार हो जावे
जहाँ प्रभु दर्शन कर सब मुक्ति पावे
उस अष्टापद पर विराज रहे हैं
प्रभु आदिनाथ

खाली हाथ आना है खाली हाथ जाना है
सिर्फ कर्मों का बोझ संग ले जाना है
भारी है तो बहता रहेगा, हल्का है तो तिर जायेगा
दे रहे प्रभु यही सीख जो बनी है जग की रीत
विराज रहे हैं अष्टापद पर
श्री आदिनाथ

कुछ खोई कुछ जागी
देखकर सपना बन गई उन्मादी
बढ़ती जा रही हूं मंजिल है पहचानी
पर राह की विकटताओं से अनजानी
ना कोई मन में भय है न संदेह
देवी-देवता कर रहे मेरी निगरानी
कैसे पहुँची अष्टापद हो रही हैरानी
यहाँ का हर कण-कण सुना रहा तुम्हारी अमर कहानी
मेरी प्रांजलि स्वीकार करो
हे प्रभु मैं तुम्हारी अनुगामिनी